OM - 18 - 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 11/29/2021 11:31 AM Page 8

परमात्म ऊर्जा

फरिश्ते समान स्थिति बनाने के लिए...

अपने को सदा बाप की याद की छत्रछाया के अन्दर अनुभव करते हो? जितना-जितना याद में रहेंगे उतना अनुभव करेंगे कि मैं अकेली नहीं लेकिन बाप दादा सदा साथ हैं। कोई भी समस्या सामने आयेगी तो अपने को कम्बाइन्ड अनुभव करेंगे, इसलिए घबरायेंगे नहीं। कम्बाइन्ड रूप की स्मृति से कोई भी मुश्किल कार्य सहज हो जायेगा। कभी भी कोई ऐसी बात सामने आवे तो बापदादा की स्मृति रखते अपना बोझ बाप के ऊपर रख दो तो हल्के हो जायेंगे। क्योंकि बाप बड़ा है और आप छोटे बच्चे हो। बड़ों पर ही बोझ रखते हैं। बोझ बाप पर रख दिया तो सदा अपने को खुश अनुभव करेंगे। फरिश्तें के समान नाचते रहेंगे। दिन-रात 24 घंटे मन से डाँस करते रहेंगे।

देह अभिमान में आना अर्थात् मानव बनना। देही अभिमानी बनना अर्थात् फरिश्ता बनना। सदैव सवेरे उठते ही अपने फरिश्ते स्वरूप की स्मृति में रहो और खुशी में नाचते रहो तो कोई भी बात सामने आयेगी उसे खुशी-खुशी से क्रॉस कर लेंगे। जैसे दिखाते हैं देवियों ने असुरों पर डाँस किया। तो फरिश्ते स्वरूप की स्थिति में रहने से आसुरी बातों पर खुशी की डाँस करते रहेंगे। फरिश्ते बन फरिश्तों की दुनिया में चले जायेंगे। फरिश्तों की दुनिया सदा स्मृति में रहेगी।

दिव्य बुद्धि अर्थात् होलीहंस बुद्धि

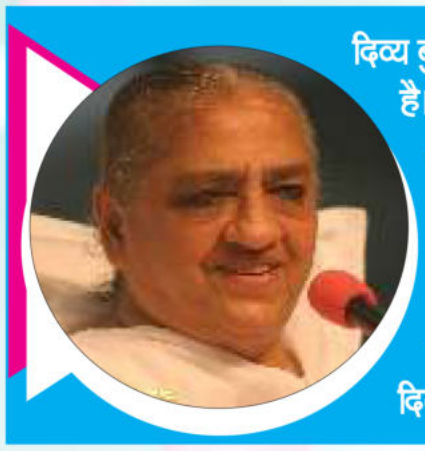

दिव्य बुद्धि बल अति श्रेष्ठ बल है। सिर्फ इसको यूज़ करो। जैसा समय उस विधि से यूज़ करो तो सर्व सिद्धियाँ आपकी हथेली में है। सिद्धि कोई बड़ी चीज नहीं है, सिर्फ दिव्य बुद्धि की सफाई है।

दिव्य बुद्धि अर्थात् होलीहंस बुद्धि। हँस अर्थात् स्वच्छता, क्षीर और नीर को या मोती और पत्थर को पहचान मोती ग्रहण करने वाले। जानते हैं कि यह कंकड़ है, यह मोती है लेकिन कंकड़ को धारण नहीं करते। इसलिए होलीहंस संगमयुगी ज्ञान-स्वरूप विद्या देवी 'सरस्वती' का वाहन है। आप सभी ज्ञान स्वरूप हो, इसलिए विद्यापति या विद्या देवी हो। यह वाहन दिव्य बुद्धि की निशानी है। आप सभी ब्राह्मण, बुद्धियोग द्वारा तीनों लोकों की सैर करते हो। बुद्धि को भी वाहन कहते हैं। वह दिव्य बुद्धि का वाहन सभी वाहन से तीव्रगति वाला है। दिव्य बुद्धि को बुद्धिबल भी कहा जाता है। क्योंकि बुद्धिबल द्वारा ही बाप से सर्वशक्तियां कैच कर सकते हो। इसलिए बुद्धिबल कहा जाता है।

जैसे साइंस बल है। साइंस बल कितनी हद की कमाल दिखाते हैं। कई बातें जो आज मानव को असम्भव लगती है वह सम्भव कर दिखाते हैं। लेकिन यह विनाशी बल है। साइंस बुद्धिबल है लेकिन दिव्य बुद्धिबल नहीं है, संसारी बुद्धि है, इसलिए इस संसार के प्रति, प्रकृति के प्रति ही सोच सकते हैं और कर सकते हैं। दिव्य बुद्धिबल मास्टर सर्वशक्तिवान बनाता है, परमात्म पहचान, परमात्म मिलन, परमात्म प्राप्ति की अनुभूति कराता है। दिव्य बुद्धि जो चाहो, जैसे चाहो, असंभव को संभव करने वाली है। दिव्य बुद्धि द्वारा हर कर्म में परमात्म प्योर टचिंग अनुभव कर सफलता का अनुभव कर सकते हैं। दिव्य बुद्धि कोई भी माया के वार को हार खिला सकती है। जहाँ परमात्म टचिंग है, प्योर टचिंग है, मिक्सचर नहीं, वहाँ माया की टचिंग अथवा वार असम्भव है। माया का आना तो छोड़ो लेकिन टच भी नहीं कर सकती। माया दिव्य बुद्धि के आगे सफलता की वरमाला बन जाती है, माया नहीं रहती। जैसे द्वापर के रजोगुणी ऋषिमुनि आत्माएं शेर को भी अपनी शक्ति से शांत कर देते थे ना! शेर साथी बन जाता, वाहन बन जाता, खिलौना बन जाता- परिवर्तन हो जाता है ना! तो आप सतोप्रधान, मास्टर सर्वशक्तिवान, दिव्यबुद्धि वरदानी - उन्हों के आगे माना क्या है, माना दुश्मन से परिवर्तन नहीं हो सकती? दिव्य बुद्धि बल अति श्रेष्ठ बल है। सिर्फ इसको यूज़ करो। जैसा समय उस विधि से यूज़ करो तो सर्व सिद्धियाँ आपकी हथेली में है। सिद्धि कोई बड़ी चीज़ नहीं है, सिर्फ दिव्य बुद्धि की सफाई है। जैसे आजकल के जादूगर हाथ की सफाई दिखाते हैं ना। वह दिव्य बुद्धि की सफाई सर्व सिद्धियों को हथेली में कर देती है।

आप सभी ब्राह्मण आत्माओं ने सर्व सिद्धियाँ प्राप्त की हैं लेकिन दिव्य सिद्धियाँ साधारण नहीं। तब आपकी मूर्ति के द्वारा आज तक भी भक्त सिद्धि प्राप्त करने के लिए जाते हैं। जब सिद्धि स्वरूप बने हैं तब तो भक्त आपसे माँगने आते हैं। तो समझा दिव्य बुद्धि की क्या कमाल है! स्पष्ट हुई ना दिव्य बुद्धि की कमाल!

कथा सरिता

दयालुता का कोई मोल नहीं

जब मैं छोटा था तो एक सब्जी बेचने वाली हमारे घर सब्जी बेचने आती थी। मेरी माँ उससे ही सब्जी खरीदती थी। रविवार को वह सब्जी बेचने वाली पालक के बंडल लेकर आई। उनकी कीमत उसने एक रूपये प्रति बंडल बोली। मेरी माँ का कीमत प्रस्ताव उसकी बोली हुई कीमत से ठीक आधा था। हालाँकि माँ ने उससे वादा किया था कि वह उस कीमत पर उससे चार बंडल खरीदेगी। कुछ देर तक दोनों अपनी-अपनी कीमत पर अड़े रहे। सब्जी वाली ने विनम्रता से कहा कि वह उस कीमत पर अपनी लागत भी नहीं वसूल कर पायेगी। उसने सिर पर टोकरी लादी और चली गई।

चार कदम आगे बढ़ने के बाद, सब्जी वाली पीछे मुड़ी और चिल्ला कर बोली, "चलिए इसे 75 पैसे बंडल का तय कर देते हैं।" मेरी माँ ने ना में अपना सिर हिलाया और अपने मूल प्रस्ताव 50 पैसे बंडल पर अटकी रही। सब्जी वाली चली गई।

वे दोनों एक-दूसरे की रणनीतियों को भली भांति जानती थीं। सब्जी वाली मुड़ी और हमारे घर तक वापस आई। मेरी माँ दरवाजे पर उसका जैसे इंतज़ार ही कर रही थी। उनके चेहरे पर एक विजयी मुस्कान थी।

यह सौदा मेरी माँ के प्रस्ताव बोली पर ही हुआ था। सब्जी वाली वहाँ स्थिर बैठ गई जैसे कि वह एक समाधि में हो। मेरी माँ ने प्रत्येक बंडल को अपने हाथ से धीरे-धीरे उछालकर वजन और गुणवत्ता की पैनी जाँच की।

बंडलों की प्रारंभिक छंटनी के बाद उन्होंने अंततः अपनी संतुष्टि के चार बंडल छांट लिए और छोटे सिक्कों से उनको पूरा भुगतान कर दिया।

सब्जी वाली ने बिना गिने पैसे ले लिए। जैसे ही वह उठी, वह चक्कर आने के कारण लड़खड़ा गई। मेरी माँ ने उसका हाथ पकड़ कर पूछा कि क्या उसने सुबह से खाना नहीं खाया? सब्जी वाली ने कहा, "नहीं, आज की कमाई से ही, मुझे कुछ चावल खरीदना है और घर जाकर खाना बनाना है।

मेरी माँ ने उसे बैठने के लिए कहा। माँ जल्दी से अन्दर गई और कुछ चपातियों और सब्जी के साथ तेजी से वापस आई और सब्जी वाली को खाने को दी। माँ ने पानी की बोतल भी उसे दी और उसके लिए चाय बनाने लगी। सब्जी वाली ने भूख और कृतज्ञतापूर्वक खाना खाया, पानी पिया और चाय पी। उसने मेरी माँ का तहदिल से शुक्रिया करते हुए, अपनी सब्जी की टोकरी सिर पर रखी और अपने काम पर चली गई।

मैं हैरान था। मैंने अपनी माँ से कहा, आप दो रूपये के सामान के लिए मोलभाव करने में होशियारी दिखा रही थीं, लेकिन उस सब्जी वाली को मंहगा भोजन देने में उदार थीं, ऐसा क्यों?

मेरी माँ मुस्कुराई और बोली, "मेरे प्यारे बच्चे, व्यापार में कोई दया नहीं होती और दयालुता में कभी कोई व्यापार नहीं होता।

एक पूजा ऐसी भी...

एक बार एक बच्चे के दादा जी जो शाम को घूमकर आने के बाद बच्चों के साथ प्रतिदिन सायंकालीन पूजा करते थे। बच्चा भी उनकी इस पूजा को देखकर अंदर से स्वयं इस अनुष्ठान को पूर्ण करने की इच्छा रखता था, किन्तु दादा जी की उपस्थिति उसे अवसर नहीं देती थी। एक दिन दादा जी को शाम को आने में विलंब हुआ, इस अवसर का लाभ लेते हुए बच्चे ने समय पर पूजा प्रारम्भ कर दी। जब दादा जी आये, तो दीवार के पीछे से बच्चे की पूजा देख रहे थे। बच्चा बहुत सारी अगरबत्ती एवं अन्य सभी सामग्री का अनुष्ठान में यथाविधि प्रयोग करता है और फिर अपनी प्रार्थना में कहता है कि भगवान जी प्रणाम आप मेरे दादा जी को स्वस्थ रखना, और दादी के घुटनों के दर्द को ठीक कर देना क्योंकि दादा और दादी को कुछ हो गया, तो मुझे चॉकलेट कौन देगा। फिर आगे कहता है, भगवान जी मेरे सभी दोस्तों को अच्छा रखना, वरना मेरे साथ कौन खेलेगा। फिर मेरे पापा और मम्मी को ठीक रखना, घर के कुत्ते को भी ठीक रखना, क्योंकि उसे कुछ हो गया, तो घर को चोरों से कौन बचाएगा (लेकिन भगवान यदि आप बुरा न मानो तो एक बात कहू, सबका ध्यान रखना, लेकिन उससे पहले आप अपना ध्यान रखना, क्योंकि आपको कुछ हो गया, तो हम सबका क्या होगा) इस प्रथम सहज प्रार्थना को सुनकर दादा की आँखों में भी आंसू आ गए, क्योंकि ऐसी प्रार्थना न कभी की थी, और न सुनी थी। कदाचित इसी सहजता का अभाव मनुष्य को सभी प्रकार के यथोचित ईश्वरीय अनुष्ठानोपरांत भी जन्मजन्मांतर तक ईश्वर का बोध भी नहीं करा पाता है।

नई दिल्ली-लोधी रोड। शैलेन्द्र शर्मा,महानिदेशक,केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के साथ ईश्वरीय ज्ञान चर्चा के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. गिरिजा बहन तथा ब्र.कु. पीयूष भाई।

राजकोट-गुज.। पाँच स्वरूपों के अभ्यास से युक्त दीपावली कार्यक्रम में केक काटते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।